International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 7, July 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

डॉ. भीमराव अम्बेडकर के धर्मिक चिन्तन का विश्लेषण

डॉ. दुलारीराम मीना
व्याख्याता (राजनीति विज्ञान)
राजकीय महाविद्यालय, खण्डार

डॉ. भीमराव अम्बेडकर का जन्म धार्मिक संस्कारों से युक्त परिवार में हुआ था उनके पिता अत्यधिक धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। वे नियम से प्रातःकाल भजन पूजन करते थे उनकी प्रार्थनाओं में कबीर और संत तुकाराम जैस कवियों की कविताताओं के अतिरिक्त गीता के श्लोक भी होते थे। धार्मिक और आध्यात्मिक विषयों में गम्भीर रूचि अम्बेडकर को अपने पिता से ही विरासत में मिली थी और उनका यह विश्वास दृढ़ हो गया कि धर्म और धार्मिक शिक्षा मनुष्य के जीवन के लिए आवश्यक है।[1] ऐसे में पारिवारिक धार्मिक वातावरण का अम्बेडकर पर विशेष रूप से प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। उन्होंने मानव जीवन और समाज में धर्म के महत्व को स्वीकार किया है। वे धार्मिक नेता या महापुरूष नहीं थे, फिर भी धर्म के प्रति उनका आग्रह प्रबल था। उनका धर्म में नैतिकता समाहित थी। अम्बेडकर का दृढ़ मत था कि धर्म और नैतिक अपरिहार्य है और वे समाज को एकता के सूत्र में बांध सकते है, किन्तु उनके अनुसार उनमें नैतिकता, विवेक एवं मानवीय सम्बन्धों पर आधारित होना चाहिये। ऐसा धर्म ही स्वतन्त्रता, समानता और बन्धुत्व के आदर्शों की ओर ले जाता है।[2] धर्म के महत्व के प्रति सचेतन होने हुए भी वे धर्म के नाम पर प्रचलित अन्याय, भेदभाव और पाखण्डों के समर्थक नहीं थे। वे धर्म को विवेक और विज्ञान सम्मत मानत थे उनकी नजर में वही धर्म उपयोगी माना जा सकता है जो समता स्वतंत्रता और बन्धुता के आदेशों के अनुरूप हो।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 7, July 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अम्बेडकर ने उन लोगों की बातों को भी स्वीकार नहीं किया जो धर्म के स्थान पर रोटी को ही सब कुछ समझते है। उनके अनुसार मनुष्य केवल रोटियां से ही जीवित नही रह सकता, उनमें एक ऐसा मन है जो विचार रूपी खुराक चाहता है। धर्म मनुष्य में आशा का संचार करता है और मनुष्य को शुभ कर्म करने के लिये प्रेरित करता है।[3] अम्बेडकर उन लोगों से सहमत नहीं थे जो यह जानते है कि धर्म मानव समाज में आवश्यक नहीं है। जबकि, उनके लिए धर्म मानव जीवन तथा सामाजिक व्यवहारों के लिए आवश्यक था।[4] उनकी दृष्टि में धर्म निरर्थक नहीं सार्थक है। समाज में अच्छे सम्बन्ध स्थापित करने के लिए आवश्यक है। वे समाज और धर्म में घनिष्ट सम्बन्ध और धर्म को सामाजिक जीवन का प्रमुख अंग मानते थे। उनके विचार में धर्म को समाज तथा मनुष्य से पृथक नहीं किया जा सकता। धर्म मानव बुद्धि का सार है, धर्म विहीन जीवन व्यर्थ है। धर्म एक शक्ति है ''धर्म मानव जाति के इतिहास में एक अत्यन्त शक्तिशाली गति यन्त्र है, धर्म ने राष्ट्रों को संगठित ही नही किया वरन् उनको खण्ड–खण्ड भी किया है।[8]

अम्बेडकर ने अपने समस्त भाषणों में लोगों में धर्म को बनाये रखने की आवश्यकता पर बल दिया। उनके अनुसार–''धर्म एक उत्तराधिकारी का अंग है। दलित वर्ग के युवा सम्मलेन को सम्बोधित करते हुए एक बार उन्होंने कहा कि ''धर्म के प्रति युवा वर्ग की बढ़ती हुई उदासीनता या उपेक्षा को देखकर मुझे दुःख होता है। धर्म कोई अफीम नही है, जैसा कुछ लोग सोचते है। मेरे में क्या अच्छाइयां या जो कुछ भी मेरी शिक्षा से समाज को लाभ हुआ है, उनको मैं अपने अन्दर जो धार्मिकता की भावना है, से लिया है। म धर्म को चाहता हूं लेकिन मैं धर्म के नाम पर किसी भी कपट या पाखण्ड अथवा आडम्बर को नहीं चाहता हूं और न ही पसन्द करता हूं।[9] धर्म मनुष्यों में आशा की जागृति करता है और उसे कार्य करने को प्रेरित करता है। अम्बेडकर के अनुसार धर्म व्यक्ति के लिए है न कि व्यक्ति धर्म के लिए।[10] जो धर्म अपने अनुयायियों को अन्य धर्मो के अनुयायियों के साथ मानवता दिखाने का पाठ नहीं पढ़ाता वह कोई धर्म नही है। जो धर्म अज्ञानी को और अज्ञानी, गरीब को और गरीब होने के लिए बाध्य करता है वह वास्तव में कोई धर्म नहीं है। यदि लोग अपने धर्म के प्रति ठीक है या उन्हें अपने धर्म में विश्वास है तो, उन्हें विचार तथा अपने कार्य दोनों में इसका अनुसरण करना चाहिए।

अम्बेडकर में चूंकि बचपन से ही धार्मिक संस्कार थे। अतः सारी बौद्धिकता और विद्वता के बावजूद वे धार्मिक थे। किन्तु उनकी धार्मिकता में कर्मकाण्ड और रूढ़ियों को स्थान नहीं था और इसी कारण न केवल सामाजिक जीवन में बल्कि व्यक्तिगत जीवन मं भी वे धर्म को

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 7, July 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आवश्यक मानते थे। वे धर्म को मानवता की सेवा के लिए मानते थे। उनका कहना था, धर्म एक प्रभाव या शक्ति है, जो जीवन में घुलमिल कर व्यक्ति के चरित्र का निर्माण करता है। व्यक्ति की क्रियाओं एवं प्रतिक्रियाओं को पाबन्द तथा नापसन्द को, धर्म निश्चित करने में सहायक सिद्ध होता है।[11] अम्बेडकर की इस परिभाषा को धर्म की सबसे उत्तम परिभाषा माना जा सकता है। इसके आधार पर यदि धर्म को समझा, परखा और गृहण किया जाए, तो निश्चत ही मानवता का बहुत कल्याण होगा।

इसमें सन्देह नहीं कि अम्बेडकर धर्म को सामाजिक एवं व्यक्ति जीवन का आवश्यक अंग मानते थे और धर्म में ही व्यक्ति और समाज का सम्मान एवं गौरव निहित मानते थे। इसी कारण धर्म का परित्याग करना वे कठिन मानते थे। अम्बेडकर ने उन्होंने मानव–जीवन में धर्म को आवश्यक बतलाया। क्योंकि वह सामाजिक संगठन तथा सम्मान का प्रतीक है। भारतीय समाज में तो धर्म के साथ ही मनुष्य की मान–मर्यादा जुडी है। इसलिए अम्बेडकर ने अपने अन्तिम दिनों में जहां, एक और धर्म का परित्याग किया तो दूसरी और धर्म को ही स्वीकार कर उसे जीवन की अमूल्य निधि बतलाया।

धर्म का स्वरूप क्या हो, उसका कार्य क्या हो और वह समाज में क्या भूमिका अदा करें? ये कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिन पर अम्बेडकर ने गम्भीरतापूर्वक विचार किया। अम्बेडकर के अनुसार–''जिससे सारी प्रजा का धारण होता है, उसे धर्म कहते है। यह व्याख्या मेरी नही है। यह व्याख्या है सनातन धर्म के अग्रणी लोकमान्य तिलक की पर मैं इसे मानता हूं। जिन सामाजिक मूल्यों और रीति–रिवाजों पर व्यवहार चलता है वही धर्म है। ये मूल्य और रीति–रिवाज ही वे बन्धन है जो व्यक्ति को समाज से बांधे रखते है। इसलिए धर्म की व्याख्या से अधिक महत्वपूर्ण उन बन्धनों को जानना है, जो समाज का योग्य संचालन करते है।''[12]

अम्बेडकर के विचारों से स्पष्ट होता है कि धर्म का मूलाधार वैयक्तिक न होकर सामाजिक होना चाहिए। धर्म समाज और व्यावहारिक जीवन से अपृथक होता हैं। धर्म का मूल्यांकन समाज व्यवस्था के दृष्टिकोण से किया जाना चाहिए। ''धर्म का मूल्याकन समाज की नैतिकता पर आधारित सामाकि मानदंडों उपयुक्त नहीं हो सकता।''

अम्बेडकर के विचार में धर्म समाज का आधार होता है, यह वह भित्ति है जिस पर सारी सच्ची असैनिक गवर्नमेन्ट आश्रित रहती है।[13] धर्म का असली तत्व नैतिकता है। जो धर्म मनुष्य

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 7, July 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

में नैतिकता उत्पन्न नहीं करता है, वह मानव का कोई कल्याण नहीं कर सकता। उसकी उपस्थिति मनुष्य के लिए सब प्रकार से निरर्थक है। इसी भाव को लेकर जैन–दर्शन में धर्म को वस्तु का स्वभाव माना गया है अर्थात्, वस्तु का जो स्वभाव है, वही उसका धर्म है। जल का स्वभाव शीतलता है, अग्नि का उष्णता है–ये ही उनके धर्म है। इसी प्रकार मनुष्य का स्वभाव केवल मनुष्यता हैं। इसी की प्रतिष्ठा करना उसका धर्म है। सत्य तो यह है कि धर्म मानव की मानस–मणि है, जो उसके अन्धकारपूर्ण जीवन–मार्ग में सर्चलाइट का काम करती है।

अम्बेडकर के अनुसार ''धर्म के लिये इतना ही पर्याप्त नहीं है कि उसमें नैतिकता हो, उस नैतिकता को भी जीवन के मूलभूत सिद्धान्तों–स्वतन्त्रता, समानता तथा भ्रातृत्व का` मानना चाहिए।[14] इसके लिये आवयश्क है कि धर्म विवेकपूर्ण और वैज्ञानिक हो। नियमों का बन्धन उसे यह रूप नही दे सकता। इसके स्थान पर कुछ आध्यात्मिक सिद्धान्त होने चाहिए। अम्बेडकर के शब्दों में, ''नियम व्यावहारिक होते है, वे आदतों पर आधारित होते है और पूर्व निश्चित क्रम के अनुसार करने पड़ते है। लेकिन सिद्धान्त बौद्धिक होते है, वे निर्माण करने के उत्तम साधन है। नियम ही बताते है कि किसी व्यक्ति को क्या करना है।[15]

इस प्रकार अम्बेडकर के धर्म की धारणा का आधार परलोकवाद तथा ईश्वरवाद नहीं है। यह मानव–केन्द्रित धारणा है। उनके विचार में धर्म का मनुष्य तथा समाज से अटूट सम्बन्ध है। वह धर्म जो समाज में विघटन तथा भेदभाव पैदा करत है, वह धर्म नहीं बल्कि संकुचित पंथ हो सकता है।

अम्बेडकर के अनुसार धर्म मानव मन को शुद्ध बनाने का मार्ग है ताकि नैतिक सिद्धान्तों के आधार पर मनुष्य–मनुष्य के बीच अच्छे सम्बन्धों की स्थापना हो सकें। वे जिस धर्म को सच्चा धर्म मानते है उसका मूलाधार नैतिकता है। उनकी दृष्टि में, ''मनुष्य का मनुष्य के प्रति प्रेम से सीधे नैतिकता की आवश्यकता उत्पन्न होती है। उसके लिए ईश्वर की स्वीकृति की आवश्यकता नहीं। यह मनुष्य के हित में है। कि वह मनुष्यय से प्रेम करें।'' इस प्रकार अम्बेडकर के धर्म की धारणा ईश्वर में विश्वास, नित्य आत्मा में आस्था, ईश्वर की पूजा, कर्मकाण्ड, दैविक शक्ति के लिए प्रार्थना, नरक–स्वर्ग की भावना, पापी आत्मा को शुद्ध करना, बलिदान आदि का निषेध करती है।[16]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 7, July 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

स्पष्ट है कि अम्बेडकर धर्म के नाम पर पाखण्ड से सहमत नही है। न ही उस धर्म में आस्था रखते हैं जो संस्थागत हैं, जो मन्दिर–मस्जिद की चार दीवारी तक सीमित हैं। चूंकि उन्होंने मानव–जीवन में धर्म व नैतिकता के महत्व को स्वीकार किया है, अतः उनके विचार में धर्म और नैतिकता के बन्धन से समाज को एकता क सूत्र में बांधा जा सकता है। वही धार्मिक विश्वास और मूल्य सामाजिक दृष्टि से उपयोगी माने जा सकते है, जो समता, स्वतन्त्रता और बन्धुता के आदर्शो के अनुरूप हों। धर्म जब तक सामाजिक जीवन के इन त्रिरत्नों को स्वीकार नहीं करता तब तक वह निष्फल व निरर्थक हैं।[17]

धर्म के प्रति आडम्बरों को देखते हुए उन्होंने अपनी आत्म–चेतना में उत्तेजित भाव तथा प्रश्नों को उठाते हुए कहा कि आप उस धर्म को स्वीकार करें जो उन कार्यो को बढ़ावा देता है? जिनसे कुछ लोगों के लिए लाभ तथा अन्य लोगों के लिये दुःख प्राप्त होता है? क्या वह धर्म सच्चा नहीं है, जो सबको आनन्द देता हो और अन्याय तथा अत्याचार के प्रति संघर्ष करता हो?[18]

अम्बेडकर के मत में केवल पाखण्ड ही धर्म का शत्रु नहीं है वरन् दासता भी समजा का एक विरोधी तत्व है, उनके अनुसार वह धर्म जो अपने दो अनुयायियों में भेदभाव उत्पन्न करता है, वह धर्म जो अपने अनुयायियों को कुत्ते तथा बिल्लियों से बदत्तर मानता हो, वह धर्म जो अपने अनुयायियों पर अनेक अत्याचार करता हो, वास्तव में वह धर्म नहीं है। इन सब बातों को धर्म का नाम नहीं दिया जा सकता। धर्म और दासता आपस में विरोधी ह। यदि एक व्यक्ति का धर्म वही है जो उसके दूसरे साथी का है, तो उनके अधिकार भी समाज होने चाहिए। इसमें सन्देह नहीं है कि अनेक प्राकृतिक असमानतायें, है, समाज में अन्याय एक शोषण है, किन्तु अपने धर्मावलम्बियों से इस प्रकार का भेदभाव करना धर्म के विपरित है।[19]

इसी दृष्टि से अम्बेडकर का धर्म मनुष्य की सेवा का माध्यम है, उनका धर्म मनुष्य को धर्म के नाम पर कुचलना नहीं है। इसीलिये उन्होंने धर्म के सैद्धान्तिक पहलू के स्थान पर व्यावहारिक पहलू पर अधिक बल दिया है। उनकी नजर में धर्म एक ऐसा मार्ग है जो व्यावहारिक जीवन से अलग नहीं किया जा सकता। किसी धर्म की परीक्षा उसके सामाजिक स्तरों तथा प्रभावों के आधार पर की जानी चाहिये। जो सामाजिक नैतिकता पर आधारित हैं और कोई स्तर इससे अधिक लाभप्रद सिद्ध नहीं होगा। यदि धर्म को मानव कल्याण का वास्तविक माध्यम बनाना है।[20]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 7, July 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अम्बेडकर उस धर्म को सच्चा धर्म नहीं मानते, जो केवल आज्ञाओं तथा निषेधों पर ही आधारित हैं। वे ऐसा धर्म चाहते थे जो अध्यात्मिक सिद्धान्तों पर आधारित हो।[21] वे सिद्धान्त जो सबके लिये समान हो, सब समय में खरे उतरते हों। उसमें नैतिकता, बौद्धिकता, स्वतन्त्रता, समानता, बन्धुत्व आदि प्रधान तत्व होने चाहिए जिसके माध्यम से

आदमी–आदमी के बीच मनुष्यत्व की स्थापना हो सकें। सुव्यवस्थित समाज का गठन करना सच्चे धर्म को सर्वोत्तम लक्ष्य होना चाहिए।

अम्बेडकर के मत में एक सच्चे धर्म में निम्न विशेषताऐं होती है[22]

1. सामाजिक एकता के लिए या तो कानून का आश्रय लेना पडता है या फिर नैतिकता का। दोनों के बिना समाज टुकड़े–टुकड़े हो जायेगा। कानून का मुख्य सम्बन्ध शान्ति और व्यवस्था से है जबकि बहुसंख्यक लोग अपना सामाजिक जीवन नैतिक सिद्धान्तों के आधार पर चलाते हैं। नैतिकता के बिना उनका जीवन कठिन हो सकता है। अतः नैतिकता पर आधारित धर्म, प्रत्येक समाज में अच्छे सम्बन्धें को निर्धारित करने के लिए प्रमुख होना चाहिये।

2. धर्म की परिभाषा आधुनिक विज्ञान के अनुकुल होनी चाहिए अन्यथा जीवन के सिद्धान्त के रूप में धर्म का महत्व समाप्त हो सकता है। धम को यदि वास्तव में कार्य करना है तो उसे बुद्धि या तर्क पर आधारित होना चाहिए, इसी का दूसरा नाम विज्ञान हैं।

3. किसी धर्म के लिए इतना ही पर्याप्त नहीं है कि उसमें नैतिकता ही हो, उस नैतिकता में जीवन के मूलभूत सिद्धान्तों–स्वतन्त्रता, समानता तथा भ्रातृत्व को मानना चाहिए। कोई धर्म जब तक इन सामाजिक सिद्धान्तों को मान्यता नहीं देगा। उसका भविष्य अन्धकार में ही बना रहेगा।

4. धर्म को निर्धनता का अनुमोदन करना चाहिए। जिन लोगों के पास धन है, उसके द्वारा परित्याग करना बहुत अच्छी बात है। यह शुभ स्थिति हो सकती है लेकिन

   निर्धनता की अवस्था कभी भी शुभ नही हो सकती। निर्धनता को शुभ अवस्था घोषित करना, धर्म को भ्रष्ट करने के समान है। बुराई तथा अपराध को बढ़ावा देना है और इस संसार को नर्क के समान बनाना हैं।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 7, July 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अम्बेडकर के विचारों से स्पष्ट होता है कि वे उस धर्म के समर्थक थे जो पूर्णतया प्रजातान्त्रिक हो उनके धर्म की आधारशिला मनुष्य की प्रकृति, उसकी बुद्धि तथा समानता में आस्थ है। उनके विचार में धर्म को एक ऐसा सामाजिक मार्ग होना चाहिए जिसके द्वारा प्रजातन्त्र, एकता तथा मानवता की ओर बढ़ सकें। अम्बेडकर धर्म को जीवन की एक ऐसी व्यवस्था मानते थे जिसमें सन्निहित सभी मूल्यों के निर्माण में उन सब व्यक्तियों का हाथ हो जो उसके सदस्य हैं। ऐसा करना समाज की प्रगति तथा व्यक्तिगत विकास के लिए वे आवश्यक समझते हैं।[22]

इसी दृष्टि से अम्बेडकर के धर्म का अर्थ, अप्रकृतिवाद या अलौकिकता में नहीं मिल सकता। उनका धर्म शुद्ध रूप से लौकिक अथवा मानवतावादी है। यह इसी संसार में आस्था रखता है। इसके लिए कोई अन्य संसार, स्वर्ग आदि के रूप में नहीं है। सामान्यतः लोग ईश्वर तथा मनुष्य के सम्बन्ध को ही धर्म मानते हैं। अम्बेडकर इस प्रकार के धर्म को स्वीकार नही करते और न ही वे उस धर्म को मानते हैं जो समाज को छिन्न–भिन्न करता है। वे जिस धर्म को मानते हैं वह बौद्धिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक है। वह समता, स्वतन्त्रता तथा बन्धुत्व का परिचायक है। अम्बेडकर की दृष्टि में यही सच्चा धर्म हैं।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 7, July 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संदर्भः—

1. एल.आर बाली : डॉ. अम्बडकर जीवन ओर मिशन, 1992 पृ.20
2. डी.आर. जाटव' बी.आर. अम्बेडकर का राजनीति दर्शन 1990 पृ. 37
3. धनंजय कीरः डॉ. अम्बेडकर लाईफ एण्ड मिशन, 1991, पृ. 502
4. ''वही''—पृ. 259
5. एल.आर.बालीः डॉ. अम्बेडकर ने क्या किया, 1991, पृ. 204
6. धनंजय कीर : डा. अम्बेडकर लॉईफ एण्ड मिशन, 1991 पृ. 305
7. ''वही''—पृ. 275
8. बी.आर. अम्बेडकरः मि. गांधी एण्ड द् इमैन्सीपेशन ऑफ द् अनटचेबिल्स, 1943, पृ. 39
9. डी.आर. जाटव : डॉ. बी.आर. अम्बेडकर व्यक्तिगत और कृतित्व, 1993, पृ. 204
10 बी.आर. अम्बेडकरः एनीहिलेशन ऑफ कास्ट, 1970, पृ. 96
11. कंवल भारतीः डॉ. अम्बेडकर बौद्ध क्यों बने, 1983 पृ. 85
12. ''वही''—पृ. 86
13. डॉ. आर. जाटवः डॉ. बी.आर. अम्बेडकर व्यक्तिगत और कृतित्व, 1993, पृ. 207
14. विश्व प्रकाश गुप्ता, मोहनी गुप्ता, भीमराव अम्बेडकर व्यक्ति और विचार, 1997, पृ. 110
15. डी.आर. जाटव : बी.आर. अम्बेडकर का राजनीति दर्शन, 1990 पृ. 33—34
16 धनंजय कीर : डा. अम्बेडकर लॉईफ एण्ड मिशन, 1991 पृ. 92
17. बी.आर. अम्बेडकरः एनीहिलेशन ऑफ कास्ट, 1937, पृ. 125
18. डी.आर. जाटव : बी.आर. अम्बेडकर का राजनीति दर्शन, 1990 पृ. 37
19 डो.आर. जाटव : बी.आर. अम्बेडकर का राजनीति दर्शन, 1990 पृ. 39
20. सत्यनारायणः बाबा साहिब डॉ. भीमराव अम्बेडकर 1992, पृ. 47